thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 3 रोहतक, 14 जून, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

इसमें किसी का क्या दोष?

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

देखिये! ईश्वर की रचना को पूर्ण रूप से समझ पाना अत्यन्त दुर्लभ है। कुछ इस सम्बन्ध में उदाहरण इस प्रकार से हैं।

यदि करील (पेड़ का नाम) के झाड़ में पत्ते नहीं लगते तो इसमें वसन्त ऋतु का क्या दोष है? यदि उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता तो इसमें सूर्य का क्या अपराध है? यदि वर्षा की बूंदें चातक (पक्षी का नाम) पपीहा के मुख में नहीं पड़ती तो इसमें बादलों का क्या दोष है? यह सब व्यवस्था उस परमपिता परमेश्वर की है, इसको बहुत कम लोग ही जान पाते हैं और पूर्णरूप से तो कोई भी नहीं जान पाता, क्योंकि पूर्ण तो केवल परमेश्वर ही है, बाकी सब अपूर्ण हैं। बहुत-सी इस प्रकार की बातें हैं, जिनमें उनका कोई दोष नहीं होता, उदाहरण के तौर पर एक सुगन्धित फूल को ही लेते हैं। जब तक वह पेड़ पर अपनी डाली के साथ लगा है तब तक वह सुगन्धि फैला रहा है। अगर कोई उसे उस डाली से अलग कर दे तो क्या होता है? वह टूटकर धीरे-धीरे सुगन्ध देना बन्द कर देता है और उसमें सड़न उत्पन्न होने के कारण दुर्गन्ध आने लगती है और जब दुर्गन्ध आने लगती है तो क्या करते हैं? इसे बाहर फैंको इसमें से बदबू आ रही है। जब वह पेड़ पर लगा था तो सुगन्धि फैला रहा था और जब उस फूल को सुगन्धि फैलाने वाली खुराक मिलनी बन्द हो गई तो उसमें सड़न उत्पन्न होने लगी और वह सुगन्धि की बजाय दुर्गन्ध फैलाने लगा। ठीक इसी प्रकार यदि मानव को सदाचार, सज्जनता, परायों पर दया, दुर्जनों के प्रति दुष्टता, सज्जनों के साथ प्रेम, विद्वानों के साथ सरलता, शत्रुओं के प्रति शूरता, बड़े लोगों के विषय में सहनशीलता, स्त्रियों के प्रति विश्वास, दीन-दुखियों की सहायता, दयालुता, पीड़ितों के प्रति करुणा, माता-पिता, आचार्य, अतिथि का आदर-सत्कार, सत्यभाषण, त्याग भावना, बुराइयों का त्याग, दूसरों के साथ न्यायपूर्वक वर्तना, अभिमान न करना, ऊँच-नीच का भाव मन में न रखना, किसी को अपमानित न करना, अपने दुर्गुणों का त्याग, दूसरों के अच्छे गुणों का ग्रहण करना आदि की शिक्षा न मिले तो इसमें उसको इनसे वंचित रह जाने में उसका क्या दोष? जिसका माता-पिता से लेकर राज्य-व्यवस्था तक जिसका जो-जो कर्त्तव्य था यदि उसने उसका पालन नहीं किया अर्थात् अपने कर्त्तव्य को नहीं निभाया तो इनके विरुद्ध आचरण करने वाले का क्या दोष?

सबसे बड़ी बात है संगति-जब बच्चा कुछ सीखने की अवस्था में होता है यदि उसे विद्वान्-विदुषी माता-पिता का संग मिलता है तो उसके संस्कार उनके अनुसार बन जाते हैं। जब थोड़ा बड़ा होता है और उसके कुछ मित्र सहयोगी बन जाते हैं, यदि मित्र अच्छे आचरण वाला मिल गया तो उसके आचरण भी अच्छे ही होंगे और यदि किसी बुरी आदतों जैसे झूठ बोलना, चोरी करना, दूसरों से द्वेष करना, दूसरों की चुगली करना, बीड़ी-सिगरेट पीना, शराब पीना तथा अन्यबहुत प्रकार के दोष हैं, यदि उनसे युक्त मित्र की संगति मिल गई तो मित्र के दुर्गुण भी उसमें आ जायेंगे। शिक्षा संस्थानों में यदि अध्यापक, आचार्य सदाचारी, सत्य-वक्ता, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान मिल जाये तो उसके शिष्य भी उसके गुणों का अनुसरण करेंगे। इन सब बातों का बनने बिगड़ने का बच्चों का ध्यान माता-पिता ने नहीं रखा तो इसमें बच्चों का क्या दोष?

महर्षि दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में लिखते हैं—"**पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।**" पुरुषार्थ से भाग्य को भी बदला जा सकता है। शरीर नाशवान् है इससे जितना पुरुषार्थ किया जाये कम है। वेद में कहा—

तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन्।

यजु० 29/22

हे जीवात्मन्! तेरा ये शरीर नाशवान है। धन भी शाश्वत नहीं है, यह सदा किसी के पास नहीं रहता, आज तेरा है, कल को किसी और का होगा। परिवार भी साथ छोड़ जाता है, परन्तु सच्चा परिवार क्या है? जो कभी साथ नहीं छोड़ता, इस जन्म और अगले जन्म में भी साथ जाता है। वह परिवार कौन-सा है? सत्य-माता, ज्ञान-पिता, धर्म-भाई, दया-बहन, शान्ति-पत्नी, क्षमा-सहनशीलता-पुत्र, ये छः मिलकर परिवार बनता है। जिस परिवार में ये छः सदस्य हैं, वही परिवार उत्तम है। वर्तमान स्थिति कैसी है—किसी ने पूछा—नगर में बड़ा कौन है? उत्तर मिला—ताड़ के वृक्षों का समूह। दाता कौन है? उत्तर मिला—धोबी जो प्रातःकाल वस्त्र ले जाकर सायंकाल वापिस लौटा देता है। चतुर कौन? उत्तर मिला—दूसरे का धन और स्त्री का अपहरण करने में बहुत से चतुर हैं। पूछा तुम इस प्रकार की परिस्थितियों में कैसे जीते हो? उत्तर मिला—जैसे विष का कीड़ा विष में ही उत्पन्न होता है और विष में ही जीता है। वैसे ही मैं भी जीता हूँ। क्या ईश्वर ने हमें ऐसा ही जीवन जीने के लिए मानव देह दिया है। चाणक्य जी लिखते हैं—बुद्धिमान् मनुष्य को अपने को अजर और अमर समझकर विद्या, धन का पुरुषार्थ से उपार्जन करना चाहिये और यह भी ध्यान रहे कि मृत्यु कब और कहां आ जाये, ऐसा सोच-समझकर सदैव धर्म का ही आचरण करना चाहिये। मैं मौत के मुंह में स्थित हूँ परन्तु मेरी आयु क्षणभर नहीं है, ऐसा सदा विचार करके धर्म कार्यों में अपने जीवन के एक-एक क्षण को लगाना चाहिए। मृत्यु तो अवश्य आनी है, परन्तु कोई जान-बूझकर गले में फन्दा डालकर मृत्यु की भेंट चढ़ जाये तो इसमें मृत्यु का क्या दोष है? कार आदि वाहन बनाने वाले ने सुविधा के लिये बनाये हैं, ताकि सफर जल्दी तय हो सके और यदि कोई उन वाहनों का बुद्धि से ठीक प्रयोग न करे और तेज रफ्तारी से स्वयं भी मृत्यु की भेंट चढ़ जाये और अन्यों को भी चढ़ा दे तो इसमें कार का क्या दोष? बनाने वाले ने गन (बन्दूक) शत्रुओं से सुरक्षा के लिए बनाई है यदि कोई उस गन से अपना, अपने परिवार वाले को या अन्य निर्दोषों को मौत के घाट उतार दे तो इसमें गन बनाने वाले या गन का क्या दोष? कोई शराब पीकर अपनी पत्नी की हत्या कर दे तो शराब की इसमें क्या दोष? दोष तो पीने वाले का है। इस प्रकार की अन्य बहुत बातें हैं, जिनसे मनुष्य अपने को सुखों की अपेक्षा दुःखों की ओर ले जाता है।

श्रेष्ठ कर्मों को करते हुए मनुष्य का एक मुहूर्त भर भी जीवित रहना

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

योग के आठ अंग

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

योगदर्शन महर्षि पतञ्जलि की रचना है। इस ग्रन्थ के चार पाद हैं। सूत्रों की संख्या 194 (एक सौ चौरानवे) है। आकार की दृष्टि से यह दर्शनों में सबसे छोटा है परन्तु महत्त्व की दृष्टि से सब दर्शनों में महान् है। योग शब्द के अर्थ अनेक हैं। योग शब्द का अर्थ जोड़ना मिलाना भी होता है। युजिर् योगे और युज् समाधौ से योग शब्द सिद्ध होता है। योगदर्शन में यह शब्द दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

अष्टांग योग—

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि॥

(योगदर्शन 2/29)

एक (यम), दूसरा (नियम), तीसरा (आसन), चौथा (प्राणायाम), पांचवाँ (प्रत्याहार), छठा (धारणा), सातवाँ (ध्यान) और आठवाँ (समाधि)। ये सब उपासना योग के अंग कहाते हैं और आठ अंगों का सिद्धान्त रूप फल संयम है।

तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (योगदर्शन 2/30)

उन आठों में से पहला 'यम' है, सो पांच प्रकार का है—एक (अहिंसा) अर्थात् सब प्रकार से सब काल में, सब प्राणियों के साथ वैर छोड़के प्रेम-प्रीति से वर्तना। दूसरा (सत्य) अर्थात् जैसा अपने ज्ञान में हो, वैसा ही सत्य बोलें, करें और मानें। तीसरा (अस्तेय) अर्थात् पदार्थ वाले की आज्ञा के बिना किसी पदार्थ की इच्छा भी न करना, इसी को चोरी त्याग कहते हैं। चौथा (ब्रह्मचर्य) अर्थात् विद्या पढ़ने के लिए बाल्यावस्था से लेकर सर्वथा जितेन्द्रिय होना और पच्चीसवें वर्ष से लेकर अड़तालीस वर्ष पर्यन्त विवाह करना, परस्त्री, वेश्या आदि का त्यागना, सदा ऋतुगामी होना, विद्या को ठीक-ठीक पढ़के सदा पढ़ाते रहना और उपस्थ इन्द्रिय का सदा नियमन करना। पांचवां (अपरिग्रह) अर्थात् विषय और अभिमानादि दोषों से रहित होना। इन पांचों का ठीक-ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज बोया जाता है।

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

दूसरा अंग उपासना का 'नियम' है जो कि पांच प्रकार का है—

शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। (योगदर्शन 2/32)

पहिला (शौच) अर्थात् पवित्रता करनी सो भी दो प्रकार की है—एक भीतर की और दूसरी बाहर की। भीतर की शुद्धि धर्माचरण, सत्यभाषण, विद्याभ्यास, सत्संग आदि शुभगुणों के आचरण से होती है और बाहर की पवित्रता जल आदि से शरीर स्थान मार्ग वस्त्र खाना-पीना आदि शुद्ध करने से होती है। दूसरा (सन्तोष) अर्थात् जो धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थ करके प्रसन्न रहना और दुःख में शोकातुर न होना। किन्तु आलस्य का नाम सन्तोष नहीं है। तीसरा (तपः) जैसे सोने को अग्नि में तपा के निर्मल कर देते हैं, वैसे ही आत्मा और मन को धर्माचरण और शुभ गुणों के आचरण रूप तप से निर्मल कर देना। चौथा (स्वाध्याय) अर्थात् मोक्ष विद्या विधायक वेदशास्त्र पढ़ना-पढ़ाना और ओंकार के विचार से ईश्वर का निश्चय करना-कराना और पांचवां (ईश्वरप्रणिधान) अर्थात् सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन का प्रेमभाव से आत्मादि सब द्रव्यों का ईश्वर के लिये समर्पण करना। ये पांच नियम भी उपासना का दूसरा अंग है।

तीसरा अंग—**स्थिरसुखमासनम्।** (योगदर्शन 2/46)

अर्थात् जिसमें सुखपूर्वक शरीर और आत्मा स्थिर हो, उसको 'आसन' कहते हैं अथवा जैसी रुचि हो वैसा करें।

चौथा अंग—**तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः।**

(योगदर्शन 2/49)

जो वायु बाहर से भीतर को आती है उसको 'श्वास' और भीतर से बाहर जाती है उसको 'प्रश्वास' कहते हैं। इन दोनों के जाने आने को विचार से रोकें। नासिका को हाथ से कभी न पकड़ें, किन्तु ज्ञान से ही उनके रोकने को 'प्राणायाम' कहते हैं।

पांचवाँ अंग—**स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्य स्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।** (योगदर्शन 2/59)

'प्रत्याहार' उसका नाम है कि जब पुरुष अपने मन को जीत लेते हैं, तब इन्द्रियों का जीतना अपने आप हो जाता है, क्योंकि मन ही इन्द्रियों का चलाने वाला है।

छठा अंग—**देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।** (योगदर्शन 3/1)

जब उपासना योग के पूर्वोक्त पाँचों अंग सिद्ध हो जाते हैं तब उसका छठा अंग धारणा भी यथावत् प्राप्त होता है। 'धारणा' उसको कहते हैं कि मन को चंचलता से छुड़ाके नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर करके ओंकार का जप और उसका अर्थ परमेश्वर है उसका विचार करना।

सातवां अंग—**तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।** (योगदर्शन 3/2)

धारणा के पीछे उसी देश में ध्यान करने और आश्रय लेने के योग्य जो अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है उसके प्रकाश और आनन्द में अत्यन्त विचार और प्रेम भक्ति के साथ इस प्रकार प्रवेश करना कि उसे समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। इस समय में ईश्वर की छोड़ किसी भी पदार्थ का स्मरण नहीं करना, किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप में मग्न हो जाता है, इसका नाम ध्यान है।

आठवां अंग—**तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः**

(योगदर्शन 3/3)

इन सात अंगों का फल समाधि है—जैसे अग्नि के बीच में लोहा भी अग्निरूप हो जाता है। इसी प्रकार परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय अपने शरीर को भी भूले हुये के समान जानके आत्मा को परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप आनन्द और ज्ञान से परिपूर्ण करने को 'समाधि' कहते हैं। ध्यान और समाधि में इतना ही भेद है कि ध्यान में तो ध्यान करने वाला, जिस मन से, जिस चीज का ध्यान करता है, वे तीनों विद्यमान रहते हैं। परन्तु समाधि में केवल परमेश्वर ही के आनन्द स्वरूप ज्ञान में आत्मा मग्न हो जाता है। वहाँ तीनों का भेदभाव नहीं रहता। जैसे मनुष्य जल में डुबकी मारके थोड़ा समय भीतर ही रुका रहता है वैसे ही जीवात्मा परमेश्वर के बीच में मग्न होके फिर बाहर को आ जाता है। **त्रयमेक संयमः॥** (योगदर्शन पाद 3। सूत्र 4)

जिस देश में धारणा की जाये, उसी में ध्यान और उसी में समाधि अर्थात् ध्यान करने योग्य परमेश्वर में मग्न हो जाने को संयम कहते हैं, जैसे एक ही काल में तीनों का मेल होना है, अर्थात् धारणा संयुक्त ध्यान और ध्यान से संयुक्त समाधि होती है, उनमें बहुत सूक्ष्म-सा भेद रहता है। परन्तु जब समाधि होती है, तब आनन्द के बीच तीनों का फल एक ही हो जाता है।

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के बढ़ते कदम

आप सभी को बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य बाल भारती विद्यालय पानीपत जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित है, निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है। इस बार विद्यालय का 10वीं और 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम बड़ा शानदार रहा है। इस बार 12वीं कक्षा के कुल 117 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी जिनमें 26 विद्यार्थियों ने मैरिट प्राप्त करके स्कूल के इतिहास में एक नया रिकार्ड कायम किया है। इससे पहले हर वर्ष केवल 5 या 7 मैरिट ही आ पाती थी लेकिन इस बार आप सभी के कुशल मार्गदर्शन में विद्यालय ने यह उपलब्धि हासिल की है। 6 विद्यार्थियों ने तो 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये हैं जिनके नाम क्रमशः भूमिका (94%), सिमरन (90.2%), जतिन कक्कड़ (93%), गौरव मनचन्दा (93%), पारस (92.2%) और पार्थ बत्तरा (90%) है।

इसी प्रकार खेलों में भी हमारा स्कूल उन्नति की ओर अग्रसर है। हमारे विद्यालय का रस्सा-कस्सी की टीम ने पिछले वर्ष पूरे हरयाणा में तृतीय स्थान प्राप्त किया था और इस बार जो जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की गई थी उसमें विद्यालय की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त करके स्कूल का नाम रोशन किया है। इसी प्रकार योगा में भी कई विद्यार्थियों ने सफलता का परचम लहराया है। जिसमें से एक विद्यार्थी नमन का चुनाव अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए हुआ है। नमन ने राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त कर स्कूल ही नहीं पूरे हरयाणा को गौरवान्वित किया है। स्कूली खेल प्रतियोगिता में हमारे स्कूल की कबड्डी की टीम ने ब्लॉक स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार आपके कुशल मार्गदर्शन और हमारे अध्यापकों की मेहनत से विद्यालय दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर है।

—प्रिंसिपल, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

thearyasamaj.org

जीवात्मा की चार अवस्था

-: वेद-मन्त्र :-

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरदृतद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ (ऋ० 4.40.5)

अर्थ—(हंसः) जीवात्मा (शुचिसत्) स्वभाव से शुद्ध, पवित्र (वसु) शरीर में निवास करने वाला (अन्तरिक्ष सत्) हृदयवेदि में विराजमान (अतिथिः दुरोणसत्) अतिथि के समान इस शरीर में रहता हुआ (नृषत्) मनुष्य देहधारी (वरसत्) विद्वानों के घर जन्म (ऋत सत्) देवों के यहाँ उत्पन्न (व्योमसत्) योनियों के घरों में जन्म लेने वाला (अब्जा) जलचर, (गोजा) पार्थिव शरीर (ऋतजा) सत्य में स्थित (अद्रिजा) नभचर प्राणियों का शरीर धारण करने वाला (ऋतम्) सत्य स्वरूप और अनादि है।

मन्त्र में जीवात्मा को हंस कहा गया है। यद्यपि आत्मा स्वभाव से शुद्ध, बुद्ध और पवित्र है, परन्तु शरीराधिष्ठित होने से अवस्था के अनुसार उसमें जो परिवर्तन होते हैं, उनका वर्णन किया गया है। चारों आश्रमों में जो कर्त्तव्य कर्म बतलाये हैं तदनुसार यहां संगति लगाने से मंत्र का अभिप्राय समझ में आ जायेगा और साथ ही आश्रम धर्म का भी बोध होगा।

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम**—नाम-हंस, स्वभाव-शुचि सत्, कार्य-नृषद्, स्थिति-अब्जा, ये चार विशेषण इस आश्रम में जीवात्मा के हैं। इस आश्रम में आत्मा हंस की भांति शुद्ध, पवित्र विचारों वाला, विषयों के कीचड़ से दूर, सामान्य मानव शरीर और प्राणशक्ति का विकास करने वाला होता है। यह जीवन की पहली मंजिल या आधारशिला है। जितना आधार सुदृढ़ और विस्तृत होगा, जीवन की अगली मंजिलें उतनी ही सुदृढ़ और सुरक्षित रहेंगी। जैसे हंस मानसरोवर के शुद्ध जल में निवास करता और मोतियों को चुगता है वैसे ही ब्रह्मचारी विषयों के पंक में न फंसकर शुद्ध आचार-विचार, तप-संयम को जीवन में अपनाने और नृषद्-मानव शरीरस्थ सभी धातुओं की वृद्धि करे। इसके लिये उसे अप् जा होना पड़ेगा। अप् प्राण और कर्म दोनों का वाचक है। ब्रह्मचारी को आलस्य छोड़ विद्या पढ़ने में पुरुषार्थ करना चाहिये और प्राणमय कोष को सुदृढ़ बनाने के लिये प्रतिदिन प्राणायाम करे। तभी वह शुचि अर्थात् शुद्ध, पवित्र रह सकेगा और अन्नमय, प्राणमय कोष भी शुद्ध रहेंगे।

2. **गृहस्थ आश्रम**—इसमें सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़कर ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट हुआ है। अब उसके परिवार में माता-पिता, पत्नी, बच्चों आदि का निवास है और वह इन सब का भरण-पोषण करता है इसलिए उसका नाम वसु अर्थात् बसाने वाला है। जैसे आठ वसु वास के हेतु हैं वैसे ही उसके गृह में प्रतिदिन पञ्चमहायज्ञों का अनुष्ठान होता है। वह परिवार के अतिरिक्त, ब्रह्मचारी, संन्यासी, दीन, दुःखी, पशु, पक्षी, कीट आदि सबको अन्न का दान देता है अतः उसे अन्तरिक्ष सत् अर्थात् अन्तरिक्षस्थ सब प्राणियों का बसाने, स्थापित करने वाला कहा है। ब्रह्मचर्य तप का आश्रम है परन्तु गृहस्थ आश्रम में सब सुख-सुविधा होने से वह वरसद् अर्थात् श्रेष्ठ स्थान पर रहने वाला है। उसका चिन्तन, मनन मनोमय कोष में ही रहता है अर्थात् मुझे यह कार्य करना है आदि।

3. **वानप्रस्थ आश्रम**—नाम-होता, स्थान-वेदिषत्, ऋत्-सत्, अद्रिजा-विज्ञानमय कोष, गृहस्थ के दायित्व से मुक्त हो अब वह वनस्थ हो गया है। पत्नी को बच्चों के पास छोड़कर उसने जंगल में अपना आसन लगाया है। जंगली फल, कन्द, मूल और क्षुद्र धान्य ही उसका भोजन है। अपना घर-गृहस्थादि का त्याग या सर्वस्व दान कर देने से उसे होता कहते हैं। वनस्थ हो एकान्त में हदय वेदि पर बैठ अर्थात् ध्यान-साधना का अभ्यास करता हुआ समुद्र से शुद्ध जल का ग्रहण करने वाले मेघ के समान शुद्ध ज्ञान का उपासक बन गया है। स्वाध्याय और सत्य स्वरूप ब्रह्म का चिन्तन करना ही उसका कार्य है। प्रतिदिन यज्ञ करना, भिक्षार्थ आये ब्रह्मचारी या साधु को भोजन देना और ज्ञान-विज्ञान का अभ्यास उसके जीवन के अंगभूत हैं। यह आश्रम भी तप का आश्रम है।

4. **संन्यास आश्रम**—नाम-अतिथिर्दुरोणसत्, व्योमसत्, ऋतजा, ऋतम् कोष आनन्दमय। वानप्रस्थ के पश्चात् चतुर्थ संन्यासाश्रम में वह अतिथि बन गया है। सर्वत्र घूमते हुये वेदोपदेश देना और प्रभु का भजन करना उसका कार्य है। अब उसका चिन्तन आनन्दमय कोष में चल रहा है। सभी सांसारिक विषयों से दूर वह ऋत अर्थात् परमात्मा की शाश्वत शक्तियों का चिन्तन, मनन करता हुआ ऋतस्पति बन गया है। जीवात्मा रूप यह हंस अनादि काल से विभिन्न योनियों में सुख-शान्ति की खोज में भटक रहा है। यदि वह मन्त्र में कहे अनुसार आश्रम धर्म का पालन करता हुआ परमात्मा की भक्ति करे तो आवागमन का यह चक्र सदा के लिये छूट जायेगा।

—आचार्य बलदेव

नारी शिक्षा पर विशेष....

भारतीय नारी के तेजी से बढ़ रहे हैं कदम

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

आज जीवन के हर क्षेत्र में भारतीय नारी के कदम तेजी से बढ़ रहे हैं। सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी सेवाओं में नारी का वर्चस्व स्थापित हो रहा है। नगरो में कार्यरत बैंकों, डाकघरों, स्कूलों, कालेजों, हस्पतालों में नारी दिन-प्रतिदिन अपनी सेवाओं के कारण लोकप्रिय हो रही हैं। वाणी की मधुरता और कर्त्तव्य निष्ठा के कारण नारी की प्रतिष्ठा बढ़ती जा रही है। अब वे दिन दूर नहीं जब नारी सब प्रकार की सेवाओं में अपना आधिपत्य ही स्थापित कर ले। आज मध्यवर्गीय परिवारों में लड़कियों को शिक्षा देना एक वरदान सिद्ध हो रहा है।

अमेरिका के राष्ट्रपति बराका ओबामा ने अनेक बार अपने सम्बोधन में कहा है कि भविष्य में भारत विश्व के पहले पांच देशों में होगा क्योंकि यहां नारी शिक्षा की साक्षरता दर अन्य देशों की तुलना में अधिक है। भारत के ग्रामीण परिवारों में नारी अनेक समस्याओं से जूझ रही है। इसका मूल कारण है निर्धनता एवं शिक्षा का अभाव। इसलिए यह अति आवश्यक है कि गांवों में जहां असली हिन्दुस्तान बसता है वहां शिक्षा के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जायें। सरकारी स्कूल खोले जायें। इनमें छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाए। अब देश में लाखों की संख्या में छात्राएं गांवों से नगरों में महाविद्यालयों एवं आई.टी.आई. व पोलेटेक्निक संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने जाती हैं। यह भारत के सुखद भविष्य का संकेत है।

स्वामी विवेकानन्द नेभारतीय नारी के सम्बन्ध में अपने सटीक विचार रखे। नारी जाति के उत्थान से ही राष्ट्र का उत्थान सम्भव है। शिक्षा का विस्तार करने से ही नारी जाति का उत्थान होगा। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, राजा राममोहनराय, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि अनेक समाज सुधारकों ने नारी शिक्षा पर बल दिया। इन सबने कहा—भारत ऐसा महान् देश है जहाँ गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री, अहिल्या और द्रोपदी जैसी तेजस्वी नारियां हुईं। आज भारतीय नारी के सामने इन्हीं के आदर्श हैं।

आज हमें आजादी प्राप्त हुये 68 वर्ष हो गए हैं। लेकिन अभी भी भारतीय नारी दासता की जंजीरों में जकड़ी हुई हैं। ये जंजीरें हैं—गांवों में नारी शिक्षा की कमी, दहेजप्रथा, कन्या भ्रूणहत्या, यौन उत्पीड़न। इन जंजीरों को काटने के लिए हम सबको नारी शिक्षा के विस्तार के लिए कार्य करना होगा। भारत सरकार को नारी उत्थान की दिशा में ठोस कदम बढ़ाने होंगे। भारतीय समाज को नारी उत्थान की दिशा में सकारात्मक दृष्टि अपनानी होगी।

प्रसिद्ध कवि रामनारायण त्रिपाठी के शब्दों में—

नारी अबला नहीं, जगत् की जननी है,
वह क्रान्ति, शान्ति की उद्घोषक,
वह प्रगति भावना की पोषक
वह माता है, पत्नी, पुत्री है,
भाई का रक्षाबन्धन है।

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजें सभा की भजनमण्डलियों का लाभ उठावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक सभा की भजनमण्डलियों के माध्यम से वेदप्रचार और आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार का कार्य उत्तम ढंग से किया जा सकता है। विशेष तौर पर हरयाणा की आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों और वेदप्रचार सप्ताह में इसका बहुत अच्छे ढंग से लाभ उठा सकती हैं। सभा में निम्नलिखित भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं—

क्रम	नाम		मोबाइल नं०
1.	श्री सहदेव सरस भजनोपदेशक	—	09582142371
2.	श्री सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक	—	9354824574
3.	श्री महेन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9416344174
4.	श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9991273589
5.	श्री चतरसिंह आर्य भजनोपदेशक	—	9812380029
6.	श्री रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक	—	9416955090
7.	श्री स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक	—	08800412687

आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सव, वेदप्रचार सप्ताह तथा विशेष अवसर पर आयोजित समारोह में अवश्य आमन्त्रित करके वेदप्रचार को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें।

—रामपाल आर्य, सभामंत्री

thearyasamaj.org

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 76 विद्यार्थी मैरिट में

गुरुकुल के कपिल ने नॉन मेडिकल में 95.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर किया टॉप

कुरुक्षेत्र 28 मई 2014। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नयी दिल्ली द्वारा बुधवार को घोषित बारहवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 76 छात्रों ने मैरिट सूची में अपनी गौरवशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने देते हुए बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र एकमात्र ऐसा विद्यालय है, जिसका जिले में परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि गुरुकुल के 126 विद्यार्थियों ने बारहवीं की परीक्षा दी थी, जिसमें 76 छात्रों ने अपनी मेधा का लोहा मनवाते हुए मैरिट सूची में अपना नाम दर्ज करवाया तथा शेष सभी विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। गुरुकुल के कपिल आर्य ने नॉन मेडिकल संकाय में 95.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर शीर्ष स्थान अर्जित कर गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नाम रोशन किया। प्राचार्य ने विषयानुसार प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों की जानकारी देते हुए बताया कि गणित में अभिषेक ने 99, शारीरिक शिक्षा में राहुल व संजय ने 98, रसायन शास्त्र व भौतिक शास्त्र में अभिषेक ने 97, संस्कृत में गौरव, मनोज, लव काम्बोज, प्रशिष, कपिल, शुभम व राहुल ने 97, अंग्रेजी में नवरीत, अनुभव, प्रशिष, कपिल व विनय ने 95, ललित कला में राहुल ने 95, लेखांकन में मनजीत ने 95, व्यावसायिक अध्ययन में प्रिंस ने 95 तथा अर्थशास्त्र में रवि ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर गुरुकुल की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाये हैं।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य व उप-प्राचार्य शमशेरसिंह ने सभी प्रतिभावान् छात्रों, आचार्यों व अभिभावकों को इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई दी। विद्यार्थियों की उपलब्धि से अभिभूत गुरुकुल के प्राचार्य ने कहा कि यदि छात्र प्रबल इच्छाशक्ति, पूर्ण समझ व परिश्रम के साथ जीवन में कोई कार्य करें तो उन्हें असफलता का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय सभी विषयों के आचार्यों को दिया, जिनके मार्गदर्शन में उन्होंने ये उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से भविष्य में इससे भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की प्रतिबद्धता जाहिर की।

नरेन्द्र मोदी जी, सुनो!

देशभक्त, धर्मात्मा, चरित्रवान्, विद्वान्।
जनसेवी, त्यागी, विनम्र, शीलवन्त इंसान॥
शीलवन्त इंसान, सत्यवादी, तपधारी।
वीर, साहसी, बली, मेहनती, परोपकारी॥
करे सुजन की मदद, दण्ड दुष्टों को देता।
ऐसा नेता प्यार, सकल जगत का पा लेता॥

नरेन्द्र मोदी जी, सुनो! आप लगाकर ध्यान।
भारत के तुम बन गये, अब मन्त्री-प्रधान॥
अब मन्त्री-प्रधान, देश है दु:खी हमारा।
अपमानित हर तरह, आज है भारत प्यारा॥
नेताओं ने जात-पात का, रोग बढ़ाया।
देशद्रोही, भ्रष्ट जनों को गले लगाया॥

ऋषियों के इस देश में गुण्डों का है जोर।
थानों के मालिक बने, जालिम डाकू-चोर॥
जालिम डाकू-चोर, मौज अब मार रहे हैं।
नाव देश की डुबा, बीच मंझधार रहे हैं॥
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जाएगा।
हम सबको नासमझ, सकल जगत बतलाएगा॥

हे नेता जी! आपका नरेन्द्र मोदी नाम।
जैसा सुन्दर नाम है, ऐसे करना काम॥
ऐसे करना काम, वेद-पथ को अपनाना।
राम-कृष्ण-चाणक्य-शिवाजी बन दिखलाना॥
सबके लिए समान, आप कानून बनाना।
क्षेत्रवाद का वर्गवाद का, भेद मिटाना॥

वल्लभ भाई पटेल को, मान आप आदर्श।
लालबहादुर शास्त्री, बन करना उत्कर्ष।
बन करना उत्कर्ष, देश की शान बढ़ाना।
बनकर वीर सुभाष, जगत् में नाम कमाना॥
भारतवासी साथ, आपके हैं, प्रिय नेता।
'निर्भय' आगे बढ़ो, बहादुर वीर विजेता॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक,
आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 164 में से 154 विद्यार्थी मैरिट में

सीबीएसई दसवीं में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 24 छात्रों का सीजीपीए रहा 10 में 10

कुरुक्षेत्र 20 मई 2014। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नयी दिल्ली द्वारा बुधवार को घोषित दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 24 छात्रों का सभी विषयों कम्यूलेटिव ग्रेड प्लाइंट एवरेज (सीजीपीए) 10 में से 10 रहा। इसके अलावा 154 विद्यार्थियों ने मैरिट सूची में अपना नाम दर्ज कराकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र व जिले का नाम रोशन किया है। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने देते हुए बताया कि गुरुकुल के 164 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी, जिसमें से शत-प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण रहे तथा 24 छात्रों ने दस में से दस सीजीपीए हासिल कर गुरुकुल की प्रतिष्ठा को चार चाँद लगाए। 154 छात्रों ने मैरिट सूची में नाम दर्ज कराया तथा सभी छात्रों ने प्रथम श्रेणी में सफलता हासिल कर गुरुकुल कुरुक्षेत्र को गौरवान्वित किया है।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य व उप-प्राचार्य शमशेरसिंह ने सभी प्रतिभावान् छात्रों, आचार्यों व अभिभावकों को इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई दी। विद्यार्थियों की उपलब्धि से अभिभूत गुरुकुल के प्राचार्य ने कहा कि यदि छात्र प्रबल इच्छाशक्ति, पूर्ण समझ व परिश्रम के साथ जीवन में कोई कार्य करें तो उन्हें असफलता का सामना नहीं करना पड़ेगा।

उन्होंने विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय सभी विषयों के आचार्यों को दिया, जिनके मार्गदर्शन में उन्होंने ये उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से भविष्य में इससे भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की प्रतिबद्धता प्रकट की।

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालय की जो रसीद बुकें दिनांक 24.12.2013 को चोरी हो गई है। जिसकी F.I.R. दर्ज हो चुकी है। सभा की पुरानी रसीद बुकें जो दिसम्बर 2013 से पूर्व छपी थी सभा कार्यालय से चोरी होने के कारण अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 11 मई 2014 के निर्णय अनुसार उन्हें निरस्त करने का निर्णय किया गया है। अत: कोई भी आर्यसमाज/व्यक्ति इन रसीदों से कोई लेन-देन न करे। यदि कोई इनमें से रसीद काटता पाया जाये तो इसकी सूचना तत्काल सभा कार्यालय को देवें। इन रसीद बुकों से धन-प्राप्ति अवैध मानी जाएगी।

—सभामन्त्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज प्रेमनगर, दुर्गा कालोनी रोहतक	13-15 जून 2014
2.	आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी	14-15 जून 2014
3.	आर्यसमाज कोसली जिला रेवाड़ी	14-15 जून 2014
4.	आर्ष गुरुकुल कालवा जिला जीन्द	15-21 जून 2014
5.	आर्यसमाज सफीदों, जिला जीन्द	22-29 जून 2014

—सभामन्त्री

thearyasamaj.org

वेदों से ही फैला संसार में ज्ञान का प्रकाश

गतांक से आगे...

❑ मनमोहन कुमार आर्य

कुछ 8 या 10 पीढ़ियां बीतने, इससे पूर्व या पश्चात, इनमें कुछ में परस्पर विवाद आदि हुए होगें। उस समय सारी पृथिवी खाली पड़ी थी, अतः कुछ लोग यत्र-तत्र पारायण करने लगे और उन-उन स्थानों पर रहने लगे और वहां की संख्या बढ़ने लगी। उसके बाद, कुछ पीढ़ियों के बाद, उनमें भी परस्पर कलह हुई होगी जिससे कुछ शान्तिप्रिय लोग लोग वहां से दूर चले गये क्योंकि पृथिवी अन्यत्र मनुष्यों से शून्य थी। इस प्रकार से चलते-चलते सैकड़ों, हजारों व लाखों वर्षो में मिस्र, यूनान व यूरोप के देश अस्तित्व में आये। वैदिक साहित्य में वर्णन आता है कि आर्यावर्त्त से भिन्न देशों में माण्डलिक राजा हुआ करते थे। आर्यावर्त्त के राजा चक्रवर्ती सम्राट रहे हैं। माण्डलिक राजा हमारे देश के चक्रवर्ती राजाओं को कर आदि दिया करते थे और बदले में हमारे देश के राजा वहां शिक्षा, सुरक्षा, न्याय आदि की व्यवसथा करते थे। स्वाभाविक है कि सभी देशों के माण्डलिक राजा व निवासी आर्यावर्त्त व भारत में आते-जाते भी रहते थे। अतः शिक्षा का आदान प्रदान आपस में चलता था। जिस प्रकार भारत में वैदिक ज्ञान था, उसी प्रकार से भारत से बाहर के देशों में भी वैदिक ज्ञान रहा होगा। वहां भी कुछ ऋषि-मुनि व विद्वान, भले ही संख्या कम रही हो, रहे होगें, सभी देशों में संस्कृत भी रही होगी और वहां की अन्य भाषायें यथा मिस्री, यूनानी, ग्रीक, लैटिन, फ्रैंच आदि भी रही होगीं। संसार के सभी देशों में भारत के माण्डलिक राजा रहे और भारत से उनका सम्पर्क बना रहा होगा और उनकी समस्याओं में भारत से सहायता व सहयोग होता रहा होगा। लगभग 5,000 वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध में जो भारी क्षति हुई उसके परिणामस्वरूप आर्यावर्त्त भारत के साथ दुनियां के सभी देशों के सम्बन्ध क्षीण पड़ गये और भारत का उन सभी देशों में और वहां के देशों के लोगों का भारत आना-जाना अवरूद्ध हो गया। भारत में ज्ञान निरन्तर घटता रहा और इसके परिणामस्वरूप अज्ञान, पाखण्ड, कुरीतियां बढ़ते रहे। इसी प्रकार अन्य देशों में न्यूनाधिक हुआ। महाभारत का युद्ध भारत की भूमि पर हुआ अतः यहां विध्वंश सर्वाधिक हुआ। अन्य देशों में इस युद्ध के कारण कुछ भौतिक विध्वंश नहीं हुआ। परन्तु भारत से ज्ञान, व्यापार व अन्य प्रकार की सहायता व सहयोग अवरूद्ध होने से वहां भी समय के साथ प्रगति के स्थान पर अवनति होती गई। कारण यह लगता है कि भारत से जो सहायता व सहयोग उन्हें मिलता था, वह बन्द हो गया। विगत 5,000 वर्षों में भारत सहित दुनियां के सभी देशों में अनेकानेक महापुरूषों ने जन्म लिया और समाज व देश के उत्थान का कार्य किया। अनेक विचारधारायें एवं मत अस्तित्व में आये। परन्तु हम देखते हैं कि यह सभी एकांगी, अपूर्ण एवं सत्य व असत्य का मिश्रण हैं। ऐसा होना स्वाभाविक है। हम विज्ञान के क्षेत्र में भी देखते हैं कि वहां आरम्भ में जो कल्पनायें, थ्योरियां व सिद्धान्त बने वह समय-समय पर संशोधित होते रहे। इससे एक लाभ यह हुआ कि आज विज्ञान के जो सिद्धान्त स्थिर हुए हैं, उनसे हमने कम्प्यूटर, वायुयान, रेलगाड़ी, जलपोत व समुद्री जहाज, भिन्न-भिन्न प्रकार के मोबाइल फोन, कारें, चिकित्सा पद्धतियां, ओषधियों का ज्ञान, शल्य क्रिया का विशद ज्ञान, भवन निर्माण कला में प्रगति आादि नाना प्रकार की उन्नति की है। यदि विज्ञान की भांति हम मत, सम्प्रदाय या भिन्न-भिन्न नाम-नामी धर्मों में भी संशोधन, परिवर्धन व उनकी प्रासंगिकता व अप्रासंगिकता पर ध्यान देते तो आज धर्म संज्ञक संगठन या संस्था सारे विश्व में केवल एक ही होती और उसमें विज्ञान की भांति बहुत उन्नति होती और सारा विश्व सुख व शान्ति का धाम बन गया होता। परन्तु मत व धर्म के क्षेत्र में ऐसा नहीं हो सका जिस कारण हम आज से 3 या 4 हजार वर्ष पूर्व जहां थे, वहीं हैं अथवा उससे भी पीछे हटे हैं।

मनमोहन कुमार आर्य

हमने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का जो अध्ययन किया है उसके अनुसार महाभारत काल तक सारे विश्व में केवल वैदिक मत या धर्म ही प्रचलित था। भारत के क्षत्रिय राजा व वैश्य, विश्व के सभी देशों में आते-जाते थे और अपना सामान बेचते व अदला-बदली मगबींदहम करते थे। हमारी वस्तुयें दूसरों देशों में जाती थी और वहां से उनकी वस्तुयें हमारे देश में आती थी। अतः हमारे देश का ज्ञान भी महाभारत काल तक व उससे कुछ समय पूर्व तक विश्व के सभी देशों में जाता रहा और वहां वैदिक धर्म का भारत से कुछ कम परन्तु प्रचार अवश्य रहा। यदि वहां धर्म का प्रचार रहा और हमारे राजा-राजपुरूष व वैश्य-व्यापारी वहां जाते थे, हम चक्रवर्ती राजा थे और वहां के माण्डलिक राजा हमें कर देते थे, हम उनकी सहायता व सहयोग करते थे, तो कोई कारण नहीं कि वहां वैदिक धर्म का प्रचार न रहा हो और वहां के लोग भी विद्यावान् न रहे हों। महाभारत काल के बाद अवश्य ही वहां भी विद्या का ह्रास हुआ और कहीं अधिक व कहीं कम ह्रास हुआ। अमेरिका क्योंकि सबसे दूर था, अतः वहां ह्रास की मात्रा अथवा परिमाण अधिकतम् माना जा सकता है। कुलुम्बस (जन्मः 31-10-1451 ई., मृत्युः 20-5-1506 ई., जन्म स्थानः जीनोआ, ईटली, मृत्यु स्थानः वालाडोलिड, स्पेन, अमेरिका की खोज की वर्षः 1492 ई.) के पहुचनें तक वहां धर्म व संस्कृति का ह्रास चरम पर था और वहां देखा गया कि लोग नग्न अवस्था में भी रहते थे। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि करोड़ों वर्षो से वहां के लोग विद्याहीन व मूर्ख थे जबकि महाभारत का युद्ध तो आज से लगभग 5,000 वर्ष पूर्व ही हुआ था और कुलुम्बस के अमेरिका पहुंचने से पूर्व लगभग 4000-4500 वर्ष का अधिकतम समय उनके विद्याहीन होने का हो सकता है। हम समझते हैं कि आर्य समाज के विद्वानों को इस प्रश्न पर विचार कर सभी आर्यजनों का मार्गदर्शन करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द के शब्दों को एक बार पुनः पढ़कर संगति लगाते हैं। महर्षि लिखते हैं कि जब तक आर्यावर्त्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिस्र, यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी। यह शाश्वत् वाक्य हैं और पूर्ण सत्य हैं। संसार भी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि ज्ञान व विद्या का आविर्भाव आर्यावर्त्त में हुआ। वेदों का प्रकाश जो कि ज्ञान की पुस्तके हैं, यह विकास डारविन के सिद्धान्त के अनुसार न होकर सीधे परमेश्वर से चार आदि ऋषियों में हुआ था। ईश्वर, जीव व कारण प्रकृति के अनादित्व व नित्यता को जानने से ईश्वर से वेदों की उत्पत्ति का सिद्धान्त समझ में आ जाता है। विदेशी इसे जानने का प्रयास नहीं करते या फिर उनके कुछ वेदों व भारतीय विद्या के प्रति पूर्वाग्रह के होने के कारण वह जानकर भी इसके स्वीकार नहीं करना चाहते। विदेशी विद्वानों ने वेद को संसार की सबसे पुरानी पुस्तक स्वीकार कर लिया है। इससे यह निष्कर्ष भी निकलता है कि पुस्तक के अस्तित्व में आने से पूर्व भी वेद में निहित ज्ञान, श्रुति-श्रवण-ज्ञान की तरह, आर्यावर्त्त में जो भारत का प्राचीन नाम है, विद्यमान था। यदि ईश्वर से वेदों का ज्ञान प्राप्त न होता तो आर्यावर्त्त के मनुष्य, जो अमैथुनी सृष्टि मे उत्पन्न हुए थे, वह स्वप्रयत्नों से ज्ञान व विद्या को उत्पन्न नहीं कर सकते थे। अतः ईश्वर से अर्थ अर्थात् भाषा सहित प्राप्त चारों वेदों का आदि ऋषियों व ब्रह्माजी आदि ऋषियों ने पठन-पाठन आरम्भ किया, अन्य सभी स्त्री-पुरूषों को पढ़ाया और समय के साथ-साथ वेदों का यह ज्ञान सर्वत्र फैलता रहा। अन्य देशों में ईश्वर से ज्ञान न मिलने के कारण वह वहां उत्पन्न नहीं हुआ। उसे उन्होनें प्राचीन भारत, आर्यावर्त्त से प्राप्त किया। यदि आसपास के कुछ गांवों में जल का एक स्रोत किसी एक गांव में एक ही स्थान पर हो तो उन सब गांवों के लोगों को जल की उपलब्धता के लिए उसी स्रोत पर निर्भर होना होगा, ऐसा ही कुछ वेदों के ज्ञान के विश्व में प्रसार पर भी लागू होता है। वेदों का ज्ञान केवल भारत में ही उपलब्ध था अतः सारे विश्व को इसके लिए भारत पर आश्रित होना पड़ा। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि इटली में जन्में कुलुम्बस आदि पुरूष अमेरिका में जब तक नहीं गये थे तब तक वहां के लोग भी लम्बे समय से मूर्ख अर्थात विद्याहीन थे। हमें लगता है कि यह लम्बी अवधि महाभारत काल के लगभग एक सौ या इससे कुछ अधिक वर्षो बाद से आरम्भ होनी चाहिये। लाखों या करोड़ों वर्ष कहने से यह अर्थ निकलता है कि महाभारत काल व उससे पूर्व तक आर्यावर्त्त भारत के लोग कभी वहां गये ही नही थे। ऐसा महर्षि के अन्यत्र उद्धृत वचनों के विपरीत है। महाभारत के अर्जुन तो अमेरिका में आते जाते रहे थे और वहां की उलोपी कन्या से उनका विवाह भी हुआ था। इसके आधार पर व अन्य कथनों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश के क्षत्रिय राजपुरूष व व्यापारी-वैश्य संसार के सभी देशों में आया जाया करते थे। महाभारत के बाद अमेरिका के लोग विद्याविहीन हो गये थे जैसा कि कुलुम्बस के जाने पर यह तथ्य सामने आया। पुनः कुलुम्बस के बाद अन्य देशों से वहां विद्या पहुंचने के बाद वह शिक्षित हुए। जो विद्या जिन देशों से अमेरिक पहुंची, उन व उन देशों में जिन देशों से विद्या पहुंची थी, उन सभी देशों में भारत से विद्या पहुंची थी। इसके बाद सुशिक्षा होने अर्थात् आधारभूत शिक्षा मिल जाने और उसमें वृद्धि कर सभी दूरस्थ देशों के लोग विद्वान हो गये। यह इसी प्रकार से हुआ कि जिस प्रकार आर्यावर्त्त में आदि काल में परमात्मा से वेदों का ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात उत्तरोत्तर काल में भारत व अन्यत्र विद्वान होते चले आये हैं। इस प्रकरण में हम आर्य विद्वानों के मार्गदर्शन व प्रतिक्रियाओं का स्वागत करेंगे।

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द के भव्य भवन की एक योजना

गतांक से आगे...

आत्मिक उन्नति—

जहाँ हम अपने व्यवहार में हाथ-पैर, आंख-कान को बरतते हैं, वहां हमारे सोच, याददाश्त के आन्तरिक कार्य मन आदि से होते हैं। शरीर, इन्द्रिय और मन आत्मा की चेतना से ही कार्य करते हैं। जैसे बल्ब, पंखे, मशीनें बिजली से चलती हैं। अत: हमें जहाँ शारीरिक, मानसिक विकास के लिए प्रयास करना चाहिए, वहां आत्मिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

तभी तो सारी भौतिक सुविधायें होने पर भी अनेक अपने आपको खोया-खोया अनुभव करते हैं। आत्मिक उन्नति के लिए **'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा'** के अनुसार जहां विद्या=अपने आपको पहचानना जरूरी है और इसके लिए उपनिषद्, दर्शन बहुत सहायक हैं, वहाँ तप=योग का अभ्यास आत्मिक विश्वास जमाने के लिए बहुत आवश्यक है।

सामाजिक जीवन—

मनुष्य एक परस्परापेक्षी सामाजिक प्राणी है। हमारा जन्म, पालन-पोषण और विकास परिवार, समाज पर ही निर्भर है। क्योंकि हमारी सारी भौतिक जरूरतें समाज द्वारा ही पूरी होती हैं। सामाजिक जीवन को सुखी बनाने के लिए आपस का सद्भाव, विश्वास और सहयोग बहुत ही आवश्यक हैं। हमारे ये सामाजिक सम्बन्ध-रिश्तों के रूप में जहाँ हैं, वहाँ मित्रों और कारोबार के कारण भी होते हैं। इन सभी सम्बन्धों को सामाजिकपन से निभाने पर ही हम सामाजिक सुख को प्राप्त कर सकते हैं। पर इसके लिए यह आवश्यक है कि हम आपस में एक-दूसरे को जात-पात, छुआ-छूत, अमीरी-गरीबी, ऊँच-नीच के रूप में अलग-अलग करके न देखें, अन्यथा परस्पर उपजी भिन्नता की भावना घृणा, ईर्ष्या की ओर ही बढ़ेगी। हमारी सामाजिक स्थिति हाथ की अंगुलियों जैसी ही है, उनकी तरह परस्पर सहानुभूति से एक दूसरे के काम आना ही सामाजिक सुख का आधार है।

आस्तिक भावना—

यह तो एक निश्चित बात है कि जिस संसार में हम रह रहे हैं, उसके हजारों प्राकृतिक पदार्थ हमने नहीं बनाए। ये सारे जिसने दिये हैं और जिसकी व्यवस्था में ये सारे कार्य करते हैं, उस ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना ही आस्तिक भावना है।

इस आस्तिक भावना से जहाँ उस कृपालु के प्रति कृतज्ञता की भावना आती है, वहां उसके साथ जुड़ने से व्यक्ति में आत्मिक बल आता है। तब विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति घबराता नहीं, दु:खी नहीं होता। अत: सुखी रहने के लिए आस्तिक भावना बहुत ही सहायक है। ऐसे ही आज की वैज्ञानिक भावना, उपलब्धियों को अपनाने और परस्पर मीठा बोलने से चहुंओर सुख उपलता है।

यह एक निश्चित बात है कि दु:ख प्राय: हमारी अज्ञानता, लापरवाही, विलासिता, असंयम और मोह से आते हैं। इसीलिए दु:ख के कारण का विचार करके उसको दूर करना चाहिए। अत: सुखी जीवन का यही सरल मार्ग है कि हम अपनी इच्छाओं को संयमित कर अपनी दिनचर्या एवं जीवनचर्या को पहले व्यवस्थित करें। क्योंकि सन्तुलित, व्यवस्थित जीवन ही सुख का आधार है तभी तो चरककार ने कहा है—**समयोग: सुखकारक:** अर्थात् सन्तुलित व्यवहार ही सुख का आधार है। सुखी कैसे रहें? के संक्षिप्त विवेचन में आया एक-एक वाक्य या सूत्र-एक-एक प्रकरण की ओर संकेत करता है। जैसे कि सुख, स्वस्थ्य, उसके साधन आहार, व्यायाम, निद्रा हैं तथा सामाजिक सम्बन्ध तीन तरह के हैं। इस प्रकार कम से कम पचास प्रकरणों को आधार बनाकर सुखी होने के सारे पहलुओं पर विचार किया गया है। वस्तुत: रचना के एक-एक वाक्य और प्रकरण को पढ़ने के बाद ही इसका पूरा रूप सामने आ जाता है।

क्रमश: अगले अंक में....

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

स्वास्थ्य-चर्चा—

अनानास में है बहुत कुछ खास

अनानास सारे देश में पहचाने जाने वाला एक मधुर फल है। इसका उपयोग अनेक प्रकार से किया जाता है। जैसे पके हुए मीठे रसदार अनानास को चाट के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि इसका स्वाद खट्टा-मीठा होता है। इसके अतिरिक्त ताजे अनानास का रस आम तौर हर गली सड़क पर पाई जाने वाली जूस की दुकानों पर सहज उपलब्ध होता है। अनानास का मुरब्बा और जैम विशेष रूप से पसंद किया जाता है। बच्चे नाश्ते के समय पाइनअप्पल जैम को बहुत पसंद करते हैं। एक तरफ अनानास इतना स्वादिष्ट है तो दूसरी ओर गुणकारी भी है। अनानास कृमिनाशक है, इसलिए पेट में कीड़े होने पर इसका रस उपयोगी होता है। अनानास के रस में प्रोटीन युक्त पदार्थों को पचाने की क्षमता है। इसमें से पेप्सीन से मिलता-जुलता एक 'ब्रोमेलिन' नामक तत्त्व होता है। अनानास का स्वादिष्ट पेय बनाने हेतु अनानास व सेब का मिश्रित रस बनाकर एक चम्मच शहद, चौथाई चम्मच अदरक का रस मिलाकर पियें। इससे आंतों से म्युकस (अम्लता) बाहर आ जाती है। उच्च-रक्तचाप, दमा, खांसी, अजीर्ण, मासिक धर्म की अनियमितता दूर हो जाती है। टॉन्सिल, गले में सूजन होने व खराश में अनानास खाने से लाभ होता है।

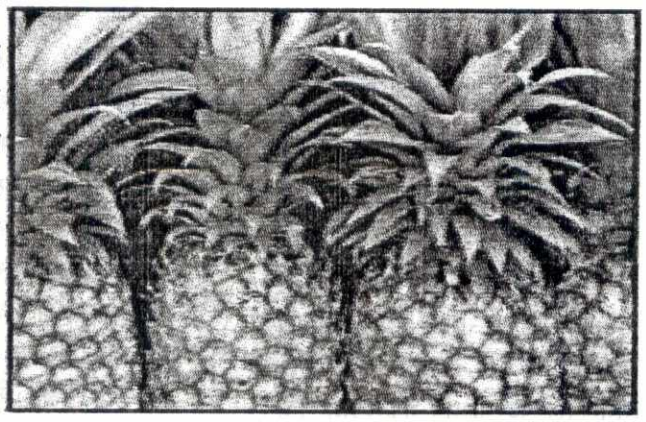

डिप्थीरिया-अनानास का रस डिप्थीरिया में लाभकारी होता है। यह झिल्ली को काट देता है, गले को साफ रखता है यह इसकी प्रमुख औषधि हैं। ताजे अनानास में 'पेपसीन' (पित्त का एक प्रधान अंश) होता है।

फुंसियाँ-अनानास का गुदा फुंसियों पर लगाने से लाभ होता है। इसका रस पीने से शरीर के अस्वस्थ तन्तु ठीक हो जाते हैं।

अजीर्ण-अनानास को नमक और काली मिर्च मिलाकर खाने से अजीर्ण दूर हो जाता है।

शक्तिदायक-अनानास घबराहट को दूर करता है। प्यास कम करता है, शरीर को पुष्ट करता है और तरावट देता है। इससे कफ तो बढ़ता है, परन्तु यह खांसी-जुकाम नहीं करता। दिल और दिमाग को बहुत ताकत देता है। खाली पेट अनानास खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है। गर्मियों में अनानास का शर्बत पीने से तरी, तावगी ठण्डक मिलती है, प्यास बुझती है। पेट की गर्मी शांत होती है। पेशाब खुलकर आता है। इसलिए पथरी के उपचार में लाभकारी है।

सूजन-शरीर की सूजन के साथ पेशाब कम आता हो, एल्ब्यूमिन मूत्र में जाता हो, यकृत बढ़ जाता हो, मन्दाग्नि हो, नेत्रों के आसपास और चेहरे पर विशेष रूप से सूजन हो तो नित्य पकी हुई अनानास खायें और केवल दूध पर रहें। तीन सप्ताह में लाभ होगा। अनानास को दूर से देखकर उसे पाने और खाने की इच्छा होती है। अगर आप उपवास पर हैं तो अनानास का जूस पीना न भूलें।

(साभार-वनौषधिमाला)

आर्यसमाज मन्दिर 16डी, दयानन्दमार्ग (वकील रोड), नई मण्डी, मुजफ्फरनगर का निर्वाचन

श्री राजपालसिंह चाहल एडवोकेट-संरक्षक, श्री आनन्दपालसिंह आर्य-प्रधान, श्री देवीसिंह आर्य-उपप्रधान, श्री आर.पी. शर्मा-मन्त्री, श्री देवीसिंह सिम्भालका-उपमन्त्री, श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य-उपमन्त्री, श्री गुलवीरसिंह आर्य-कोषाध्यक्ष, श्री राकेश कुमार आर्य-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री यशपाल मलिक-उप-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री अशोक बालियान एडवोकेट माजरा-अधिष्ठाता आर्यवीर दल, श्री सुरेन्द्रपाल सिंह आर्य-प्रचारमन्त्री, श्री डॉ. नरेशकुमार आर्य-संगठनमंत्री, श्री मंगतसिंह आर्य-भण्डार अध्यक्ष।

—आर.पी. शर्मा-मन्त्री

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

दिनांक 16 मई 2014 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के स्वामी आनन्द सभागार भवन में प्रात: 10 बजे आचार्य प्रमोद योगार्थी की अध्यक्षता में दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी मुख्य अतिथि के रूप में थे। विद्यालय के छात्रों ने ईश्वर भक्ति व राष्ट्ररक्षा पर प्रेरणादायक भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया और तीन विद्यार्थियों का दीक्षान्त समारोह किया गया, जिसमें जोशी कुमार, रणजीत कुमार, सुमन राय हैं। इन विद्यार्थियों ने आचार्य प्रमोद को कार्यालय के लिए कुर्सी भेंट की तथा मुख्य अतिथि व अन्य अध्यापकों को भी पारितोषिक भेंट किया। डॉ. प्रमोद जी व क्रान्तिकारी जी ने वैदिक साहित्य भेंट किया। इन विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया। मंच का संचालन श्री कैलाश जी शास्त्री ने किया। इस अवसर पर आचार्य नरेश जी, दीपचन्द जी शास्त्री, राजू, दीपक आर्य, चिरंजीलाल आर्य, संदीप आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद देसी घी का प्रसाद वितरित किया।

—ललित पनसोतरा, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार)

स्व० स्वामी देवानन्द की पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) के संस्थापक स्व० स्वामी देवानन्द जी की 29वीं पुण्यतिथि दिनांक 20.5.2014 को यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर द्वारा यज्ञ किया गया। यजमान का स्थान वानप्रस्थ अतरसिंह स्नेही, महाशय मोलड़राम, ब्र० दीपकुमार आर्य ने किया। 10 बजे स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि समारोह शुरू हुआ। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने स्वामी देवानन्द जी के जीवन के प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए। अन्य श्रद्धांजलि देने वालों में अतरसिंह स्नेही, ब्र० दीपकुमार आर्य, प्रिं० इन्द्रदेव, पं० रामजीलाल पूर्व सांसद, सीताराम आर्य, वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री रामकुमार आर्य, गुरुकुल के मन्त्री लाल बहादुर जी एडवोकेट, डॉ. डी.डी. शर्मा, शशिपाल शास्त्री आदि थे।

पं० सूर्यदेव जी पुरोहित आर्यसमाज माडल टाउन हिसार के ईश्वर भक्ति व समाज सुधार के भजन हुये। स्वामी सर्वदानन्द का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। श्री चुनीलाल आर्य, महेन्द्र आर्य, फूलसिंह आर्य, अभिमन्यु आर्य, आचार्य मानसिंह पाठक, अध्यापक रणधीर सिंह आर्य, मा० संजीव आर्य, निहालसिंह दांगी आदि उपस्थित थे।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, उपमंत्री गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि दिनांक 11.5.2014 को श्री सुखवीर सिंह ढाण्डा बुडाना (हिसार) निवासी का हिसार फ्रैंड्स कालोनी में अपनी कोठी में हृदयगति रुकने के कारण 44 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह अपने पीछे एक पुत्र एक पुत्री तथा धर्मपत्नी छोड़ गये।

19.5.14 को हिसार कोठी में प्रात: 9 बजे श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम वैदिक विद्वान् आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर द्वारा यज्ञ किया गया। उन्होंने आध्यात्मिक प्रवचन रखा व श्रद्धांजलि दी। अन्य श्रद्धांजलि देने वालों में वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, जिलेसिंह ढाण्डा आदि ने प्रभु से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को सद्गति मिले तथा शोकाकुल परिवार को असहनीय दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

इस अवसर पर श्री सूरजमल शास्त्री, भीमसिंह, बलजीत, ईश्वरसिंह, श्रीमती मन्जू, सुशील देवी, अमित देवी, मेवादेवी, मनिता देवी, सुमन देवी, मनीष ढाण्डा आदि उपस्थित थे।

—रमेश ढाण्डा बुडाना (हिसार)

आचार्य वेदमित्र जी के यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम

1. पूना में बृहद् यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 18-19 मई 2014 को पूना में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। संस्कार यज्ञों के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने वैदिक कर्मकाण्डों की वैज्ञानिक व्याख्याओं से यह सिद्ध किया कि केवल ज्ञान होना अधूरा है। ज्ञान को जब कर्म में प्रणीत किया जाता है तब आत्मा में आनन्द भी होता है। अथर्ववेद के 14वें सूक्त में ब्रह्मचारी रहते एक राजपुत्र जब प्रजापति का अधिकारी बनता है तो भी वह राजर्षि के वैदिक व्रत का अनुशीलन करता है। इसी ज्ञान और कर्म के एक प्राण होने पर पति-पत्नी एक दूसरे के अधिष्ठाता हो जाते हैं। उस गृहस्थ के लिए यह स्वर्ण की नौका बन जाता है। **'अग्निर्वै पाप्मनो अपहन्ता'** ज्ञान ही पाप से हटाता है। श्री सुरेश जी अग्रवाल द्वारा सुन्दर व्यवस्था की गई थी। अनेक स्थानों से भी यज्ञप्रेमी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुये।

2. बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

दिनांक 27 मई 2014 को भऊ जमालपुर में बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी थे। आचार्य जी ने विश्व शान्ति की प्रथम कड़ी स्त्री-पुरुष का वैदिक उपदेश दिया। विवाह संस्कार में वर-वधू हस्त-बन्ध हो वेद का मन्त्र बोलते हैं—**समञ्जन्तु समापो हृदयानि नौ**-आत्मीय सम्बन्ध ही परमशान्ति तथा अरुन्ध व्रत (बाधामुक्त सम्बन्ध) का बोध प्राप्त करा सकता है। श्री सोमवीर जी ने सुन्दर व्यवस्था की थी।

3. घर-घर नवान्न यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

ऋषि दयानन्द ने संस्कारों के मूल में यज्ञ को सम्मिलित इसीलिए कहा है कि क्योंकि यज्ञ से मन व आत्मा प्रसन्न होते हैं। आज भी आर्यों के घरों में नवान्न यज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ होते हैं। भाऊ रोहतक के श्री रामकंवार, श्री सुरेश, श्री मनोज, श्री विक्रम, श्री नरदेव, श्री प्रदीप, श्री योगेन्द्र के घरों पर यज्ञ किये गये। यज्ञ के उपरान्त उत्तम भोजन का प्रबन्ध किया गया।

—मनोज आर्य, भऊ आर्यपुर (रोहतक)

इसमें किसी का क्या दोष ?... प्रथम पृष्ठ का शेष....

अच्छा है, परन्तु दुष्टकर्म करने वाले का तो एक क्षणभर (कल्प-भर) जीना भी किसी के हित में नहीं है, न तो समाज के और न ही राष्ट के हित में है। विज्ञान, पराक्रम और कीर्ति से युक्त तथा लोकों में प्रसिद्ध होकर जो व्यक्ति एक क्षण भी जीवित रहता है, सज्जन लोग उसी को कहते हैं, यूं तो कौआ भी जीवित रहता है जिसको कोई भी पसन्द नहीं करता। वह किसी का धन भी नहीं हरता परन्तु बोली के कारण सबकी झिड़कियां ही खाता है।

वेद सदैव मनुष्य को ऊपर उठने का उपदेश करता है—

बीते हुए को भूल जाना चाहिए और भविष्य में क्या होगा इसकी भी चिन्ता न करनी चाहिए। वर्तमान काल को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। Longfellow लिखते हैं—

Trust no future, however pleasant,
Let the dead past bury its dead,
Act act is the living present,
Heart withere and God over head.

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो उस पर विश्वास मत करो, भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना उसे अपने और परमात्मा पर विश्वास रखकर वर्तमान काल में ही करो। कहावत भी है—जो कल करना सो आज कर, आज करना सो अब कर। पल में प्रलय होयगी फिर करेगा कब।

जो समय की कदर ना करे और उसे व्यर्थ के कार्यों में बिता दे। जिन कार्यों से कोई उपलब्धि न हो, किसी का उपकार, भला न हो ऐसे कार्यों का क्या लाभ ? यदि इसी तरह समय नष्ट करते रहे तो इसमें समय का क्या दोष ? जो समय बीत गया वह वापिस तो आने से रहा। जिस मनुष्य के जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चार पुरुषार्थों में से एक भी नहीं है, उसका जन्म ऐसे ही व्यर्थ और निष्फल है जैसे बकरी के गले में लटकने वाले स्तन, जिनसे न तो दूध निकलता है और न ही कोई गले की शोभा बढ़ती है। अगर मनुष्य जीवन को सफल बनाना है तो धार्मिक बनो, धर्म का आचरण करो अथवा इतना पुरुषार्थ करो कि अपनी इष्ट कामनाओं को भोग सको, अगर पुरुषार्थ नहीं करोगे तो इसमें ईश्वर का क्या दोष ?

thearyasamaj.org

क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है, यदि है तो क्यों दिया?

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है? यह प्रश्न हर चिन्तनशील व मननशील व्यक्ति के विचार में आता है, कि ईश्वर जब निराकार है तो उसने कैसे वेद ज्ञान को सुनाया होगा। ज्ञान को सुनाने के लिए शरीर और मुख का होना बहुत जरूरी है। इसलिए यह ज्ञान ईश्वर का न होकर ऋषि-मुनियों का दिया हुआ ज्ञान होना चाहिए। परन्तु यह ज्ञान ईश्वर का ही दिया हुआ है, इसके पीछे कारण यह है कि हम जो सृष्टि देखते हैं, यह ठीक वैसी ही है जैसा सृष्टि के सम्बन्ध में वेदों में लिखा है। जब सृष्टि को ईश्वर ने बनाया है तो यह जरूरी है कि वेदों को भी ईश्वर ने ही बनाया है। दोनों की एकरूपता यह सिद्ध करती है कि दोनों को ही ईश्वर ने बनाया है। यह सर्वविदित है कि मनुष्य चाहे कितना भी महान् हो, ऋषि-मुनि हो, पर सृष्टि को नहीं बना सकता। सृष्टि को बनानेवाला सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् होना आवश्यक है। इसलिए ईश्वर में ये तीनों गुण होने से, ईश्वर ने ही यह सृष्टि रची है और ईश्वर ने ही चारों वेदों को बनाया है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने वेदज्ञान मनुष्यों को कैसे सुनाया। इसके लिए महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखते हैं कि सृष्टि उत्पन्न करने के बाद यानि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि बनाने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बनाकर उसमें युवा स्त्री-पुरुष पैदा किये जिससे आगे की सृष्टि चलती रहे। इसी समय चार ऋषि जिनकी आत्मा सब से उत्तम थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा था उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, इनको क्रमशः प्रकाशित किया और उनके मुख से उच्चारित करवाया। वैसे तो इन वेदों को उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों ने सुना पर ब्रह्मा ऋषि जो सबसे अधिक बुद्धिमान् व योग्य थे उसने चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और वह अन्य लोगों को वेद के मंत्रों को अर्थसहित सुनाता रहा जैसा उन चारों ऋषियों ने सुनाया था। फिर अन्य लोगों भी अपने पुत्र-पौत्रों को तथा शिष्यों को सुनाते रहे। इस प्रकार सुनाने और सुनने का क्रम लाखों-करोड़ों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम व दवात आदि का आविष्कार होगया तब इनको चार ग्रंथों में लिपिबद्ध कर दिया गया। इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते हैं यानि सुनाना-सुनना की प्रथा से चला हुआ ज्ञान। काफी वेद-मंत्रों पर ऋषियों के नाम भी लिखे मिलते हैं, इसी से लोगों को भ्रम हुआ कि वेद, ऋषि-मुनियों के बनाये हुए हैं। पर वे ऋषि उन मंत्रों को बनानेवाले नहीं हैं पर उन मंत्रों के द्रष्टा हैं जिन्होंने उन मंत्रों को पूरी तरह समझा था तथा आत्मसात् किया था। वे ऋषि उन मंत्रों के निर्माता नहीं, बल्कि द्रष्टा हैं।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने वेद क्यों बनाये। वेदों को बनाने की उसको क्या आवश्यकता पड़ी। इसका उत्तर यह है कि ज्ञान दो किस्म का होता है। एक स्वभाविक दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक यानि साधारण ज्ञान वह होता है जो ईश्वर की तरफ से सभी जीवों को प्रदत्त है। इस ज्ञान से जीव अपने नित्य कर्म करता है यानि खाना-पीना, बैठना-उठना, सोना-जागना तथा सन्तान उत्पन्न करना आदि। यह ज्ञान पशु-पक्षियों व कीट-पतंगों में अधिक और मनुष्यों में कम होता है। कारण पशु-पक्षी इसी ज्ञान से अपना पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। इस ज्ञान से किये कर्मों का फल ईश्वर नहीं देता कारण यह तो जीव को अपना जीवन चलाने के लिए करने ही पड़ते हैं। दूसरा ज्ञान है नैमित्तिक ज्ञान जो सिखाने से सीखा जाता है। बगैर सिखाये यह ज्ञान नहीं आता। यह ज्ञान मनुष्यों में अधिक और पशु-पक्षियों में कम होता है कारण, पशु-पक्षियों को इस ज्ञान की जरूरत बहुत कम पड़ती है जब हम किसी कुत्ते को बुलाकर रोटी देने हैं तो कुत्ता बड़ी प्रसन्नता से आकर रोटी ले जाता है और लेकर शान्ति से बिना भय के रोटी को खाता है। पर हम देखते हैं कि जब कुत्ता चोरी करके रोटी लेता है तो वह दुबककर मालिक की निगाह से बचकर खाने की कोशिश करता है। कारण उसको यह पता है कि यह रोटी मैंने मालिक की बिना इच्छा से चुराकर ली है। यह उसका नैमित्तिक ज्ञान है। परन्तु मनुष्य में नैमित्तिक ज्ञान अधिक होता है। वह सिखाने से ही सीखता है और उसमें स्वाभाविक ज्ञान कम है। इसका उदाहरण यह है कि कुत्ते का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरना सीख जाता है, उसको सिखाने की जरूरत नहीं है। परन्तु मनुष्य के बच्चे को यदि पानी में छोड़ दोगे तो वह डूब जायेगा कारण यह सिखाने से सीखता है। उस बच्चे को तैरना सिखाया जाये तो वह तैरकर निकल जायेगा। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्य को सिखाने के लिए वेद-ज्ञान दिया। इस वेद-ज्ञान में ईश्वर ने यह बताया है कि ऐ मनुष्य! तुम्हें अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बनाने के लिए तुम्हें क्या काम करने चाहिय और क्या काम नहीं करने चाहिए।

सब जीवों में मनुष्य योनि सब से उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर योनि है। इससे अच्छी ईश्वर ने कोई योनि नहीं बनाई। जीव का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है जो मनुष्य योनि में ही सम्भव है। इसलिए मनुष्ययोनि मोक्ष पाने का द्वार है। यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि योनियाँ दो किस्म की होती हैं। एक भोगयोनि दूसरी कर्मयोनि। भोगयोनि में किये कर्मों का फल नहीं मिलता। ये योनियाँ केवल भोग भोगने के लिए ही मिलती हैं और कर्मयोनि में किये हुए अच्छे व बुरे कर्मों का फल ईश्वर सुख व दुःख के रूप में देता है। पशु-पक्षी, कीट-पतंग व पेड़-पौधे केवल भोगयोनियाँ हैं। इनमें किये कर्मों का फल नहीं मिलता। मनुष्ययोनि भोग व कर्म दोनों योनि है। इसमें मनुष्य के लिये अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में ओर बुरे किये कर्मों का फल दुःख के रूप में देता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र और फल पाने में ईश्वर की न्यायव्यवस्था के अधीन है यानि परतन्त्र है। मनुष्य जैसा कर्म करना चाहे वैसा कर सकता है, ईश्वर उसकी आत्मा में संकेत जरूर करता है कि अच्छा काम कर, बुरा काम मत कर, किन्तु मना नहीं करता। मनुष्य जैसा-जैसा कर्म करता रहेगा ईश्वर वैसा-वैसा ही फल उसको देता रहेगा। यदि मनुष्य अपने पूरे जीवन में परोपकार की भावना से ही काम करेगा, गीता की भाषा में ऐसे कर्मों को निष्काम कर्म कहा गया है तो वह व्यक्ति मोक्ष पाने का अधिकारी बन जाता है। वैसे तो कर्म की व्याख्या करना बड़ा कठिन है, पर अनुमान यह है कि पच्चास प्रतिशत से अधिक अच्छे कार्य करनेवाले को साधारण मनुष्य की योनि मिलती है। जितने अच्छे काम अधिक करेगा उतनी ही मनुष्य की योनि अच्छी मिलती जायेगी और पूरे जीवन निष्काम कर्म करेगा तो वह मोक्ष को प्राप्त होगा। जो मनुष्य अपने जीवन में जितने अधिक बुरे काम करेगा उसको उतनी ही पशु-पक्षी, कीट-पतंग की निम्न योनि मिलती रहेगी।

यदि ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में वेद-ज्ञान न देता तो मनुष्य भी पशुओं की भांति अज्ञानी ही बना रह जाता। वेदों के अनुसार चलने से ही मनुष्य अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सुखी व सफल बनाता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है जो उसका अन्तिम लक्ष्य है जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को उसके कर्मानुसार मनुष्य योनि में भेजता है। अब भी मनुष्य के बच्चे को जन्म होते ही किसी अज्ञात स्थान पर पशुओं के साथ रखा जाये तो वह कुछ नहीं सीख पायेगा और पशुओं की भांति ही बना रहेगा। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आदि में जिस प्रकार मनुष्य की पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं उनमें आखों के लिए अग्नि, नाक के लिए पृथ्वी, कान के लिए आकाश, जिह्वा के लिए पानी और त्वचा के लिए हवा बनाया है उसी प्रकार मनुष्य की बुद्धि व विवेक के लिए वेदज्ञान दिया है जिसके अनुसार चलने से वह अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके।

हम कृतज्ञ हैं उस महान् आत्मा देव दयानन्द के जिन्होंने करीब पांच हजार वर्षों से लुप्त वेद-ज्ञान का अपने जीवन में अनेक दुःखों व कष्टों को सहन करते हुए, कठिन परिश्रम व त्याग, तपस्या के द्वारा संसार में पुनः प्रकाश किया और पूरे मानव-मात्र को मोक्षप्राप्ति का राह बतलाया गया। अब हमारा पावन कर्त्तव्य है कि महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज जो वेद-प्रचार व परोपकारी कार्यों को करने में जुटा हुआ है, उससे जुड़ें और वेद-मार्ग पर चलकर अपना व दूसरों का जीवन सुखी व सफल बनावें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।